

जिस कर्म के द्वारा किसी स्त्री या पुरुष को अपने प्रति मुग्ध करने का भाव निहित हो, वो मोहनकर्म' कहलाता है। मोहन अथवा सम्मोहन यह दोनों प्रायः एक ही भाव को प्रदर्शित करते हैं। मोह को ममत्व, प्रेम, अनुराग, स्नेह, माया और सामीप्य प्राप्त करने की लालसा का कृत्य माना गया है। मोहन कर्म की यही सब प्रतिक्रियाएं होती हैं। निष्ठुर, विरोधी, विरक्त, प्रतिद्वंदी अथवा अन्य किसी को भी अपने अनुकूल, प्रणयी और स्नेही बनाने के लिए मोहन कर्म का प्रयोग किया जाता है। मोहन कर्म के प्रयोगों को सिद्ध करने के लिए पहले निम्नलिखित मंत्र का दस हजार जप करना चाहिए।

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा ।''

प्रयोग से पूर्व प्रत्येक तंत्र को पहले उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर लेना चाहिए। मोहन कर्म के प्रयोग निम्नलिखित है :-

१. तुलसी के सूखे हुए बीज के चूर्ण को सहदेवी के रस में पीसकर ललाट पर तिलक के रूप में लगाएं।
२. असगंध और हरताल को केले के रस में अच्छी तरह से पीसकर उसमें गोरोचन मिलाएं तथा मस्तक पर तिलक लगाएं तो देखने वाले मोहित हो जायेंगे।
३. वच, कूट, चंदन और काकड़ सिंगी का चूर्ण बनाकर अपने शरीर तथा वस्त्रों पर धूप देने अथवा इसी चूर्ण का मस्तक पर तिलक लगाने से मनुष्य, पशु, पक्षी जो भी देखेगा मोहित हो जाएगा। इसी प्रकार पान की मूल को घिसकर मस्तक पर उसका तिलक करने से भी देखने वाले मोहित होते हैं।
४. केसर, सिंदूर और गोरोचन इन तीनों को आंवले के रस में पीसकर तिलक करने से लोग मोहित होते हैं।
५. श्वेत वच और सिंदूर पान के रस में पीसकर एवं तिलक लगाकर जिसके भी सामने जाएंगे वो मोहित हो जाएगा।
६. अपामार्ग (जिसे औंगा, मांगरा या लाजा भी कहते हैं) धान की खील और सहदेवी - इन सबको पीसकर उसका तिलक करने से व्यक्ति किसी को भी मोहित कर सकता है।
७. श्वेत दूर्वा और हरताल को पीसकर तिलक करने से मनुष्य तीनों लोकों को मोहित कर लेता है।
८. कपूर और मैन्सिल को केले के रस में पीसकर तिलक करने से अभीष्ट स्त्री-पुरुष को मोहित कर सकता है।

९. तंत्र साधक गूलर के पुष्प से कपास के साथ बत्ती बनाए और उसको नवनीत से जलाए। जलती हुई बत्ती की ज्वाला से काजल पारे तथा उस काजल को रात्रिकाल में अपनी आंखों में आंज ले। इस काजल के प्रभाव से वो सारे जगत् को मोहित कर लेता है। ऐसा सिद्ध किया हुआ काजल कभी किसी को नहीं देना चाहिए।

१०. श्वेत धुंधली के रस में ब्रह्मदंडी की मूल को पीसने के बाद शरीर पर लेप करने से सारा संसार मोहित हो जाता है।

११. बिल्व पत्रों को लाने के बाद उन्हें छाया में सुखा लें। फिर उन्हें पीसकर कपिला गाय के दूध में मिलाकर गोली बना लें। उस गोली को घिसकर तिलक करने से देखने वाला तन, मन और धन से मोहित हो जाएगा।

१२. श्वेत मदार की मूल और श्वेत चंदन-इन दोनों को पीसकर उसका शरीर पर लेप करें। इस क्रिया से किसी को भी सहज ही मोहित किया जा सकता है।

१३. श्वेत सरसों को विजय (भांग) की पत्ती के साथ पीसकर मस्तक पर लेप करें। अब जिसके सामने भी जाएंगे वो मोहित हो जाएगा।

१४. तुलसी के पत्तों को लाकर उन्हें छाया में सुखा लें। फिर उनमें विजया यानी भांग के बीज तथा असगंध को मिलाकर कपिला गाय के दूध में पीस लें। तत्पश्चात् उसकी चार-चार माशे की गोलियां बनाकर प्रातः उठकर खाएं। इससे सारा जगत् मोहित हुआ प्रतीत होता है।

१५. कड़वी तुंबी के बीजों के तेल में कपड़े की बत्ती बनाकर जलाएं और उससे काजल पार कर आंखों में अंजन की भांति लगाएं। अब जिसकी तरफ भी दृष्टि उठाकर देखेंगे, वो मोहित हो जाएगा।

१६. अनार के पंचांग को पीसकर उसमें श्वेत धुंधली मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाएं। इस तिलक के प्रभाव से कोई भी मोहित हो सकता है।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

स्तंभन क्रिया का सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। बुद्धि को जड़, निष्क्रिय एवं हतप्रभ करके व्यक्ति को विवेक शून्य, वैचारिक रूप से पंगु बनाकर उसके क्रिया-कलाप को रोक देना स्तंभन कर्म की प्रमुख प्रतिक्रिया है। इसका प्रभाव मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर पर भी पड़ता है। स्तंभन के कुछ अन्य प्रयोग भी होते हैं। जैसे-जल स्तंभन, अग्नि स्तंभन, वायु स्तंभन, प्रहार स्तंभन, अस्त्र स्तंभन, गति स्तंभन, वाक् स्तंभन और क्रिया स्तंभन आदि।

त्रेतायुग के महान् पराक्रमी और अजेय-योद्धा हनुमानजी इन सभी क्रियाओं के ज्ञाता थे। तंत्र शास्त्रियों का मत है कि स्तंभन क्रिया से वायु के प्रचंड वेग को भी स्थिर किया जा सकता है। शत्रु,

अग्नि, आंधी व तूफान आदि को इससे निष्क्रिय बनाया जा सकता है। इस क्रिया का कभी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए तथा समाज हितार्थ उपयोग में लेना चाहिए। अग्नि स्तंभन का मंत्र निम्न है।

१. ॐ नमो अग्निरुपाय मम् शरीरे स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा।

अयुतजपात् सिद्धि भवति।

अष्टोत्तरशत जपात् प्रयोग (सिद्धिम) भवति॥''

ॐ नमो इत्यादि अग्नि स्तंभन का मंत्र है। इस मंत्र के दस हजार जप करने से सिद्धि होती है तथा एक सौ आठ जप करने से प्रयोग सिद्ध होता है।

स्तंभन से संबंधित कुछ प्रयोग निम्नलिखित हैं :

२. घी व ग्वार के रस में आक के ताजा दूध को मिलाकर, शरीर पर उसका लेप करने से भी अग्नि स्तंभन होता है।

३. केले के रस में घृतकुमारी व ज्वारपाठा के रस को मिलाकर शरीर पर लेप करने से शरीर अग्नि में घिरा होने पर भी नहीं जलता है।

४. पीपल, मिर्च और सौंठ को कई बार चबाकर निगल लें। इसके पश्चात् मुंह में जलता हुआ अंगारा भी रखें, तब भी मुंह नहीं जलेगा।

५. चीनी के साथ गाय के घृत को पीकर अदरक के टुकड़े को मुंह में डालकर चबाएं फिर तपे हुए लोहे के टुकड़े को मुंह में रखें तो वह भी बर्फ की भांति ठंडा प्रतीत होगा।

६. ॐ नमो दिगंबराय अमुकस्य स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा।

अयुत जपात् मंत्रः सिद्धो भवति।

अष्टोत्तर शत जपात् प्रयोगः सिद्धो भवति।

उपर्युक्त मंत्र का दस हजार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है और आवश्यकता होने पर एक सौ आठ बार जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र -

अमुकस्य' के स्थान पर जिसके आसन पर स्तंभन करना हो उसका नाम लेना चाहिए।

७. भांगरे के रस में सरसों (सफेद) को पीसकर, मस्तक पर उसका लेप करके जिसके सम्मुख भी जाएंगे उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जाएगा।

८. अपामार्ग और सहदेई को लोहे के पात्र में डालकर पीसें और उसका तिलक मस्तक पर लगाएं। अब जो भी देखेगा उसका स्तंभन हो जाएगा।

उपर्युक्त मंत्र के एक लाख जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और प्रयोग के समय एक सौ आठ बार जप करके प्रयोग करने से सैन्य स्तंभन होता है ।

१७. मिट्टी के एक पात्र में श्मशान की भस्म से शत्रु का नाम लिखें और उसे नीले सूत्र से बांधकर एक गहरे गड़ढे में गाड़ दें। तदनंतर उस पर एक पत्थर रखकर ढांप दें। ऐसा करने से शत्रु की पूरी सेना का ही स्तंभन हो जाता है।

१८. ॐ नमो भगवते महारौद्राय

गर्भस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा॥

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए 1 लाख जप करना जरूरी है। अन्यथा प्रयोग सफल नहीं होंगे। जब भी प्रयोग करना हो तो एक सौ आठ बार जप अवश्य करें।

□□□□□□ :

१९. केशर, शक्कर, ज्वारपाठा और कुंदपुष्प को समान मात्रा में शहद में मिलाकर खाने से गर्भपात से रक्षा होती है।

२०. ऋतुस्नाता स्त्री यदि रेंडी के बीज को निगल ले तो उसका गर्भ कभी नहीं गिरता। कमर में धतूरे का बीज बांधने से भी गर्भ स्तंभन होता है। रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब काले धतूरे की मूल लाकर गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध दें। इससे गर्भ का स्तंभन होता है।

२१. कुम्हार के हाथ से लगी हुई चाक की मिट्टी को शहद में मिलाकर बकरी के दूध के साथ सेवन करने से गर्भ का स्तंभन होता है।

□. □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ : ÷

द्वेष' का अर्थ है दूसरों के लाभ में अवरोध उत्पन्न करना है इसी द्वेष भावना का क्रियात्मक रूप ÷विद्वेषण' कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य होता है किन्हीं दो लोगों के बीच फूट, विद्रोह, उपद्रव, अविश्वास और शत्रुता के भाव उत्पन्न करके विघटन की उत्पत्ति करना।

ॐ नमो नारदाय अमुकस्याकेन

सहविद्वेषणम् कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है और जब कोई तंत्र प्रयोग करना हो तो पहले मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके सिद्धि प्राप्त कर लेनी चाहिए। मंत्र में अमुक के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसके नाम का उच्चारण करें।

□□□□□□ :

१. शेर और हाथी के दांतों को गाय के मक्खन के साथ पीसकर जिनके नामों से आग में हवन किया जाएगा, वे विद्वेषण के प्रभाव में आ जाएंगे।

२. कुत्ते के बाल तथा बिल्ली का नाखून मिलाकर जहां जलाया जाएगा वहां के लोगों में विद्वेषण उत्पन्न हो जाएगा।

३. साही का कांटा जिसके मकान के मुख्य द्वार पर गाड़ दिया जाएगा, उस घर में हर समय कलह बनी रहेगी।

४. जब कभी भी दो व्यक्तियों के बीच द्वेष उत्पन्न करना हो, तो उनके पैरों की मिट्टी को सान एवं गूंधकर उससे एक पुतली बनाएं और श्मशान में ले जाकर उसे भूमि में गाड़ दें। इस क्रिया को करने से उनके बीच द्वेष उत्पन्न हो जाएगा।

५. कोई भाषण या समारोह चल रहा हो, तो भैंसे और घोड़े के बालों को परस्पर मिलाकर जलाएं। इससे सभा या समारोह में भगदड़ मच जाएगी।

६. एक हाथ में कव्वे का पंख और दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर विद्वेषण के मंत्र से अभिमंत्रित करें और उन दोनों पंखों को फिर काले सूत से बांधकर जिस घर में गाड़ दिया जाएगा, उस घर में रहने वालों का आपस में झगड़ा हो जाएगा।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

वशीकरण का अर्थ वश में करना है। वह कर्म जिसके द्वारा प्रयोगकर्ता अभीष्ट प्राणी को अपने वश में कर लेता है ÷ वशीकरण कहलाता है। वस्तुतः यह आकर्षण और मोहनकर्म का चरम विकसित और अत्यधिक प्रभावी रूप है।

१. ॐ नमो नारायणाय सर्व लोकानृ मम वंश कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करके इसे सिद्ध करें और प्रयोग के समय एक सौ आठ बार जप करने से प्रयोग में सफलता मिलती है। अथवा इस मंत्र को भी सिद्ध कर सकते हैं।

२. ॐ नमो भगवते उऽशोऽधराय ध्य मोध्य मिली मिली ठः ठः स्वाहा।

शुभ मुहूर्त में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से मंत्र का जप आरंभ करें। तीस हजार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, फिर किसी पर भी प्रयोग करने से पूर्व उक्त वस्तु को सात बार अभिमंत्रित करें तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। साधक दोनों मंत्र में से किसी को भी सिद्ध कर सकता है। दोनों मंत्र समान प्रभावशाली हैं।

□□□□□□ :

३. ब्रह्मदंडी, वच, और कूठ के चूर्ण को किसी भी रविवार के दिन पान में डालकर खिलाने से वह प्रयोगकर्ता के वश में हो जाएगा।

४. वट+ वृक्ष की मूल को पानी में घिसकर उसमें चिता की भस्म मिलायें और मस्तक पर उसका तिलक लगाकर जिसके सामने जाएंगे वह वश में हो जायेगा ।

५. पुष्य नक्षत्र के दिन पुनर्नवा की जड़ को लाकर उसे उपरोक्त मंत्र से केवल सात बार अभिमंत्रित करे और दाएं हाथ की कलाई में बांध लें । अब जो भी उसे देखेगा, वशीभूत हो जाएगा ।

६. कपिला गाय के दूध में अपामार्ग की जड़ को पीसकर तिलक लगाने वाला साधक तीनों लोकों को भी वश में कर सकता है ।

७. सहदेही की छाया में सुखाकर चूर्ण बना लें । तत्पश्चात उसे पान में डालकर जिसे भी खिलाएंगे वह वशीभूत हो जाएगा ।

८. गोरोचन और सहदेवी को मिलाकर उसका तिलक करने वाला व्यक्ति सभी को वशीभूत कर लेता है ।

९. उदुंबर की जड़ को घिसकर उसका तिलक करने वाला व्यक्ति किसी को भी वश में कर सकता है ।

१०. गूलर की जड़ का चूर्ण पान में डालकर जिसे भी खिलाया जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा ।

११. सरसों और देवदाली के चूर्ण को गोली बनाकर और उस गोली को मूंह में रखकर जिससे भी बातचीत की जाएगी वह उसी के हक में बोलने लगेगा ।

१२. हरताल, मैनसिल, केसर, कूठ और सौंठ का चूर्ण करके उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलाकर तिलक लगाने से सब लोगों का वशीकरण हो जाता है ।

१३. गोरोचन, कमल का पत्र, कांगनी और लाल चंदन- इनका ललाट पर तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं ।

१४. विल्व पत्र और विजौरा नींबू को बकरी के दूध में पीसकर तिलक करने से भी लोग वशीभूत हो जाते हैं ।

१५. आंवले के रस में मैनसिल और असगंध मिलाकर माथे पर लेप करने से भी हर किसी को वश में किया जा सकता है ।

१६. ॐ नमः कामाख्यादेव्यै अमुकीं में वशं कुरु-कुरु स्वाहा ।

एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है । प्रयोग के समय एक माला का जप करें । अमुकीं के स्थान पर अभीष्ट स्त्री का नाम लें ।

□□□□□□ :

१७. काक जंघा, लगर, केशर और मैनसिल का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डालेंगे, वो वश में हो जाएगी।

१८. चिता की राख, वच कूट, तगर और केशर का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डाल दिया जाएगा, वो वश में हो जाएगी।

१९. पान के रस में लालमखना और मैनसिल पीसकर मंगलवार के दिन तिलक करने से स्त्रियों को वशीभूत किया जा सकता है।

२०. ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति को वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जप कर इसे सिद्ध करें तथा प्रयोग के समय एक माला जप करें। पति को वश में करने के लिए निम्नलिखित तंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

२१. विष्णुक्रांत, भांगरा, गोखर और गोरोचन को पीसकर गोली बना लें। फिर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करने के बाद गोली को घिसकर तिलक करने से पति वश में हो जाता है।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

आकर्षण तंत्र में सबसे पहले (क्लीं) बीज मंत्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है इसके सिद्ध होने के बाद ही आकर्षण तंत्रों का प्रयोग करना चाहिए। क्लीं बीज मंत्र की कामबीज यानि कामकला बीज कहते हैं। त्रिकोण की ऊर्वमुख तथा अधोमुख स्थापना से जो आकृति बनती है वह योनि मुद्रा कहलाती है। इसके बीच में क्लीं की जाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिए इसका जप करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१. सर्वप्रथम भृकटि के मध्य में योनिमुद्रा की कल्पनाकरके उसके बीच में क्लीं की अक्षर की स्थापना कर, उसका ध्यान करना चाहिए।

२. प्रातः काल में दो घंटे तक इसका ध्यान अवश्य करना चाहिए।

३. स्वस्थ मन से शांत चित होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिए।

४. दाएं हाथ की कनिष्ठिका उंगली पर माला फेरनी चाहिए।

५. दंडासन का उपयोग व दक्षिण दिशा में मुंह रखना चाहिए एवं मूंगा की माला पर जप करना चाहिए।

६. छह महीने में यह बीज मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद आकर्षण मंत्र और तंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

ॐ नमः आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षणं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जपकर सिद्ध करें तथा प्रयोग के समय 1 माला जप करें।

अमुक के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना है उनका नाम लेना चाहिए।

□□□□□□ :

१. भोजपत्र पर अनामिका उंगली के रक्त से उपरोक्त मंत्र लिखें और मध्य में अभीष्ट स्त्री या पुरुष का नाम लिखकर शहद में डाल दें। इस क्रिया से उसका आकर्षण हो जाएगा, जिसका नाम लिखा होगा।

२. रवि पुष्य के दिन ब्रह्मदंडी को लाकर पीस लें। तदनंतर जिस कामिनी के मस्तक पर यह चूर्ण डाल दिया जाएगा वह स्त्री वशीभूत हो जाएगी।

३. पंचमी के दिन सूर्यावर्त वृक्ष की मूल लाकर एवं उसे पीसकर चूर्ण बना लें फिर पूर्वोक्त मंत्र से एक सौ आठ बार अभिमंत्रित कर, जिस स्त्री या पुरुष को पान के साथ खिलाएंगे, वो आकर्षित होकर खिंचा चला आएगा।

नोट : अंत में सभी प्रयोग समाज के हितार्थ में या अच्छे कार्य हेतु किये जायें तो अच्छा होगा। किसी भी बुरे उद्देश्य हेतु किया गया प्रयोग लाभ की अपेक्षा हानि भी कर सकता है।

पता : डॉ. निर्मल कोठारी

ब्लू ऐस्ट्रो पॉइंट

१३ किड स्ट्रीट, कोलकाता-१६

□. □□□□ □□□□ □□□□□□ :

जिस कर्म के द्वारा किसी स्त्री या पुरुष को अपने प्रति मुग्ध करने का भाव निहित हो, वो 'मोहनकर्म' कहलाता है। मोहन अथवा सम्मोहन यह दोनों प्रायः एक ही भाव को प्रदर्शित करते हैं। मोह को ममत्व, प्रेम, अनुराग, स्नेह, माया और सामीप्य प्राप्त करने की लालसा का कृत्य माना गया है। मोहन कर्म की यही सब प्रतिक्रियाएं होती हैं। निष्ठुर, विरोधी, विरक्त, प्रतिद्वंदी अथवा अन्य किसी को भी अपने अनुकूल, प्रणयी और स्नेही बनाने के लिए मोहन कर्म का प्रयोग किया जाता है। मोहन कर्म के प्रयोगों को सिद्ध करने के लिए पहले निम्नलिखित मंत्र का दस हजार जप करना चाहिए।

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा।''

प्रयोग से पूर्व प्रत्येक तंत्र को पहले उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर लेना चाहिए। मोहन कर्म के प्रयोग निम्नलिखित है :-

१. तुलसी के सूखे हुए बीज के चूर्ण को सहदेवी के रस में पीसकर ललाट पर तिलक के रूप में लगाएं।

२. असगंध और हरताल को केले के रस में अच्छी तरह से पीसकर उसमें गोरोचन मिलाएं तथा मस्तक पर तिलक लगाएं तो देखने वाले मोहित हो जायेंगे।

३. वच, कूट, चंदन और काकड़ सिंगी का चूर्ण बनाकर अपने शरीर तथा वस्त्रों पर धूप देने अथवा इसी चूर्ण का मस्तक पर तिलक लगाने से मनुष्य, पशु, पक्षी जो भी देखेगा मोहित हो जाएगा। इसी प्रकार पान की मूल को घिसकर मस्तक पर उसका तिलक करने से भी देखने वाले मोहित होते हैं।

४. केसर, सिंदूर और गोरोचन इन तीनों को आंवले के रस में पीसकर तिलक करने से लोग मोहित होते हैं।

५. श्वेत वच और सिंदूर पान के रस में पीसकर एवं तिलक लगाकर जिसके भी सामने जाएंगे वो मोहित हो जाएगा।

६. अपामार्ग (जिसे औंगा, मांगरा या लाजा भी कहते हैं) धान की खील और सहदेवी - इन सबको पीसकर उसका तिलक करने से व्यक्ति किसी को भी मोहित कर सकता है।

७. श्वेत दूर्वा और हरताल को पीसकर तिलक करने से मनुष्य तीनों लोकों को मोहित कर लेता है।

८. कपूर और मैन्सिल को केले के रस में पीसकर तिलक करने से अभीष्ट स्त्री-पुरुष को मोहित कर सकता है।

९. तंत्र साधक गूलर के पुष्प से कपास के साथ बत्ती बनाए और उसको नवनीत से जलाए। जलती हुई बत्ती की ज्वाला से काजल पारे तथा उस काजल को रात्रिकाल में अपनी आंखों में आंज ले। इस काजल के प्रभाव से वो सारे जगत् को मोहित कर लेता है। ऐसा सिद्ध किया हुआ काजल कभी किसी को नहीं देना चाहिए।

१०. श्वेत धुंधली के रस में ब्रह्मदंडी की मूल को पीसने के बाद शरीर पर लेप करने से सारा संसार मोहित हो जाता है।

११. बिल्व पत्रों को लाने के बाद उन्हें छाया में सुखा लें। फिर उन्हें पीसकर कपिला गाय के दूध में मिलाकर गोली बना लें। उस गोली को घिसकर तिलक करने से देखने वाला तन, मन और धन से मोहित हो जाएगा।

१२. श्वेत मदार की मूल और श्वेत चंदन-इन दोनों को पीसकर उसका शरीर पर लेप करें। इस क्रिया से किसी को भी सहज ही मोहित किया जा सकता है।

१३. श्वेत सरसों को विजय (भांग) की पत्ती के साथ पीसकर मस्तक पर लेप करें। अब जिसके सामने भी जाएंगे वो मोहित हो जाएगा।

१४. तुलसी के पत्तों को लाकर उन्हें छाया में सुखा लें। फिर उनमें विजया यानी भांग के बीज तथा असगंध को मिलाकर कपिला गाय के दूध में पीस लें। तत्पश्चात् उसकी चार-चार माशे की गोलियां बनाकर प्रातः उठकर खाएं। इससे सारा जगत मोहित हुआ प्रतीत होता है।

१५. कड़वी तुंबी के बीजों के तेल में कपड़े की बत्ती बनाकर जलाएं और उससे काजल पार कर आंखों में अंजन की भांति लगाएं। अब जिसकी तरफ भी दृष्टि उठाकर देखेंगे, वो मोहित हो जाएगा।

१६. अनार के पंचांग को पीसकर उसमें श्वेत धुंधली मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाएं। इस तिलक के प्रभाव से कोई भी मोहित हो सकता है।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

स्तंभन क्रिया का सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। बुद्धि को जड़, निष्क्रिय एवं हतप्रभ करके व्यक्ति को विवेक शून्य, वैचारिक रूप से पंगु बनाकर उसके क्रिया-कलाप को रोक देना स्तंभन कर्म की प्रमुख प्रतिक्रिया है। इसका प्रभाव मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर पर भी पड़ता है। स्तंभन के कुछ अन्य प्रयोग भी होते हैं। जैसे-जल स्तंभन, अग्नि स्तंभन, वायु स्तंभन, प्रहार स्तंभन, अस्त्र स्तंभन, गति स्तंभन, वाक् स्तंभन और क्रिया स्तंभन आदि।

त्रेतायुग के महान् पराक्रमी और अजेय-योद्धा हनुमानजी इन सभी क्रियाओं के ज्ञाता थे। तंत्र शास्त्रियों का मत है कि स्तंभन क्रिया से वायु के प्रचंड वेग को भी स्थिर किया जा सकता है। शत्रु, अग्नि, आंधी व तूफान आदि को इससे निष्क्रिय बनाया जा सकता है। इस क्रिया का कभी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए तथा समाज हितार्थ उपयोग में लेना चाहिए। अग्नि स्तंभन का मंत्र निम्न है।

१. ॐ नमो अग्निरुपाय मम् शरीरे स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा।

अयुतजपात् सिद्धिर्भवति।

अष्टोत्तरशत जपात् प्रयोग (सिद्धिम) भवति॥''

ॐ नमो इत्यादि अग्नि स्तंभन का मंत्र है। इस मंत्र के दस हजार जप करने से सिद्धि होती है तथा एक सौ आठ जप करने से प्रयोग सिद्ध होता है।

स्तंभन से संबंधित कुछ प्रयोग निम्नलिखित हैं :

२. घी व ग्वार के रस में आक के ताजा दूध को मिलाकर, शरीर पर उसका लेप करने से भी अग्नि स्तंभन होता है।

४. पीपल, मिर्च और सौंठ को कई बार चबाकर निगल लें। इसके पश्चात् मुंह में जलता हुआ अंगारा भी रखें, तब भी मुंह नहीं जलेगा।

५. चीनी के साथ गाय के घृत को पीकर अदरक के टुकड़े को मुंह में डालकर चबाएं फिर तपे हुए लोहे के टुकड़े को मुंह में रखे तो वह भी बर्फ की भांति ठंडा प्रतीत होगा ।

६. ॐ नमो दिगंबराय अमुकस्य स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा ।

अयुत जपात् मंत्रः सिद्धो भवति ।

अष्टोत्तर शत जपात् प्रयोगः सिद्धो भवति ।

उपर्युक्त मंत्र का दस हजार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है और आवश्यकता होने पर एक सौ आठ बार जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र -

अमुकस्य' के स्थान पर जिसके आसन पर स्तंभन करना हो उसका नाम लेना चाहिए।

७. भांगरे के रस में सरसों (सफेद) को पीसकर, मस्तक पर उसका लेप करके जिसके सम्मुख भी जाएंगे उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जाएगा ।

८. अपामार्ग और सहदेई को लोहे के पात्र में डालकर पीसैं और उसका तिलक मस्तक पर लगाएं। अब जो भी देखेगा उसका स्तंभन हो जाएगा।

९. भांगरा, चिरचिटा, सरसों, सहदेई, कंकोल, वचा और श्वेत आक इन सबको समान मात्रा में लेकर कूटें और सत्त्व निकाल लें। फिर किसी लोहे के पात्र में रखकर तीन दिनों तक घोटें। अब जब भी उसका तिलक कर शत्रु के सम्मुख जाएंगे, तो उसकी बुद्धि कुठित हो जाएगी।

१०. ॐ नमो भगवते महाकाल पराक्रमाय शत्रूणां शस्त्र स्तंभन कुरु-कुरु स्वाहा ।

[illegible]

एक लक्ष जपामंत्रः सिद्धो भवति नान्यथा ।

अष्टोत्तरशत जपात् प्रयोगः सिद्ध्यति ध्रुवम्॥

उपरोक्त मंत्र का एक लाख जप करने से वह सिद्ध हो जाता है और जब इसका प्रयोग करना हो, एक सौ आठ बार पुनः जप कर प्रयोग करें तो यह प्रयोग सफल होता है।

११. पुष्य नक्षत्र वाले रविवार के दिन अपराजिता की मूल को उखाड़कर मुंह में रखने अथवा सिर पर धारण करने से शस्त्र स्तंभन हो जाता है ।

१२. रवि पुष्य के दिन श्वेत गुंजा की मूल को लाकर धारण करें तो युद्ध में शत्रु के शस्त्र का भय नहीं रहता अथवा उसके शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ।

१३. खजूर की मूल को पैर और हाथ में धारण करने से खंजर-शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ।

१४. जामुन की मूल को हाथ पर और केबड़े की मूल को मस्तिष्क पर तथा ताड़ की मूल को मुंह में रखने से शस्त्र चाहे जिस प्रकार हो, उसका स्तंभन हो जाता है । इन तीनों जड़ों का चूर्ण बनाकर घृत के साथ सेवन करने से आक्रमणकारी के शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ।

१५. चमेली की मूल को मुख में रखने से किसी भी शस्त्र का भय नहीं रहता । रविवार को पुष्य नक्षत्र आने पर अपामार्ग की मूल लाकर उसे पीस लें और शरीर पर उसका लेप करें तो सभी प्रकार के शस्त्र से स्तंभन हो जाता है ।

१६. ॐ नमः काल रात्रि त्रिशूलधारिणी ।

मम शत्रुसैन्य स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा ।

एक लक्षजपाच्यापं मंत्रः सिद्धः प्रजायते ।

उपरोक्त शतजपात् प्रयोगे सिद्धिरुत्तमा ॥

उपर्युक्त मंत्र के एक लाख जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और प्रयोग के समय एक सौ आठ बार जप करके प्रयोग करने से सैन्य स्तंभन होता है ।

१७. मिट्टी के एक पात्र में श्मशान की भस्म से शत्रु का नाम लिखें और उसे नीले सूत्र से बांधकर एक गहरे गड़ढे में गाड़ दें । तदनंतर उस पर एक पत्थर रखकर ढांप दें । ऐसा करने से शत्रु की पूरी सेना का ही स्तंभन हो जाता है ।

१८. ॐ नमो भगवते महारौद्राय

गर्भस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए 1 लाख जप करना जरूरी है । अन्यथा प्रयोग सफल नहीं होंगे । जब भी प्रयोग करना हो तो एक सौ आठ बार जप अवश्य करें ।

□□□□□□ :

१९. केशर, शक्कर, ज्वारपाठा और कुंदपुष्प को समान मात्रा में शहद में मिलाकर खाने से गर्भपात से रक्षा होती है।

२०. ऋतुस्नाता स्त्री यदि रेंडी के बीज को निगल ले तो उसका गर्भ कभी नहीं गिरता। कमर में धतूरे का बीज बांधने से भी गर्भ स्तंभन होता है। रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब काले धतूरे की मूल लाकर गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध दें। इससे गर्भ का स्तंभन होता है।

२१. कुम्हार के हाथ से लगी हुई चाक की मिट्टी को शहद में मिलाकर बकरी के दूध के साथ सेवन करने से गर्भ का स्तंभन होता है।

□. □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ : ÷

'द्वेष' का अर्थ है दूसरों के लाभ में अवरोध उत्पन्न करना है इसी द्वेष भावना का क्रियात्मक रूप 'विद्वेषण' कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य होता है किन्हीं दो लोगों के बीच फूट, विद्रोह, उपद्रव, अविश्वास और शत्रुता के भाव उत्पन्न करके विघटन की उत्पत्ति करना।

ॐ नमो नारदाय अमुकस्याकेन

सहविद्वेषणम् कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है और जब कोई तंत्र प्रयोग करना हो तो पहले मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके सिद्धि प्राप्त कर लेनी चाहिए। मंत्र में अमुक के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसके नाम का उच्चारण करें।

□□□□□□□ :

१. शेर और हाथी के दांतों को गाय के मक्खन के साथ पीसकर जिनके नामों से आग में हवन किया जाएगा, वे विद्वेषण के प्रभाव में आ जाएंगे।

२. कुत्ते के बाल तथा बिल्ली का नाखून मिलाकर जहां जलाया जाएगा वहां के लोगों में विद्वेषण उत्पन्न हो जाएगा।

३. साही का कांटा जिसके मकान के मुख्य द्वार पर गाड़ दिया जाएगा, उस घर में हर समय कलह बनी रहेगी।

४. जब कभी भी दो व्यक्तियों के बीच द्वेष उत्पन्न करना हो, तो उनके पैरों की मिट्टी को सान एवं गूंधकर उससे एक पुतली बनाएं और श्मशान में ले जाकर उसे भूमि में गाड़ दें। इस क्रिया को करने से उनके बीच द्वेष उत्पन्न हो जाएगा।

५. कोई भाषण या समारोह चल रहा हो, तो भैंसे और घोड़े के बालों को परस्पर मिलाकर जलाएं। इससे सभा या समारोह में भगदड़ मच जाएगी।

६. एक हाथ में कव्चे का पंख और दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर विद्वेषण के मंत्र से अभिमंत्रित करें और उन दोनों पंखों को फिर काले सूत से बांधकर जिस घर में गाड़ दिया जाएगा, उस घर में रहने वालों का आपस में झगड़ा हो जाएगा।

□. □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ :

वशीकरण का अर्थ वश में करना है। वह कर्म जिसके द्वारा प्रयोगकर्ता अभीष्ट प्राणी को अपने वश में कर लेता है ÷ वशीकरण कहलाता है। वस्तुतः यह आकर्षण और मोहनकर्म का चरम विकसित और अत्यधिक प्रभावी रूप है।

१. ॐ नमो नारायणाय सर्व लोकानृ मम वंश कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करके इसे सिद्ध करें और प्रयोग के समय एक सौ आठ बार जप करने से प्रयोग में सफलता मिलती है। अथवा इस मंत्र को भी सिद्ध कर सकते हैं।

२. ॐ नमो भगवते उऽमोक्षधराय ध्य मोध्य मिली मिली ठः ठः स्वाहा।

शुभ मुहूर्त में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से मंत्र का जप आरंभ करें। तीस हजार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, फिर किसी पर भी प्रयोग करने से पूर्व उक्त वस्तु को सात बार अभिमंत्रित करें तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। साधक दोनों मंत्र में से किसी को भी सिद्ध कर सकता है। दोनों मंत्र समान प्रभावशाली है।

□□□□□□ :

३. ब्रह्मदंडी, वच, और कूठ के चूर्ण को किसी भी रविवार के दिन पान में डालकर खिलाने से वह प्रयोगकर्ता के वश में हो जाएगा।

४. वट + वृक्ष की मूल को पानी में घिसकर उसमें चिता की भस्म मिलायें और मस्तक पर उसका तिलक लगाकर जिसके सामने जाएंगे वह वश में हो जायेगा।

५. पुष्य नक्षत्र के दिन पुनर्नवा की जड़ को लाकर उसे उपरोक्त मंत्र से केवल सात बार अभिमंत्रित करे और दाएं हाथ की कलाई में बांध लें। अब जो भी उसे देखेगा, वशीभूत हो जाएगा।

६. कपिला गाय के दूध में अपामार्ग की जड़ को पीसकर तिलक लगाने वाला साधक तीनों लोकों को भी वश में कर सकता है।

७. सहदेवी की छाया में सुखाकर चूर्ण बना लें। तत्पश्चात् उसे पान में डालकर जिसे भी खिलाएंगे वह वशीभूत हो जाएगा।

८. गोरोचन और सहदेवी को मिलाकर उसका तिलक करने वाला व्यक्ति सभी को वशीभूत कर लेता है।

९. उदुंबर की जड़ को घिसकर उसका तिलक करने वाला व्यक्ति किसी को भी वश में कर सकता है।

१०. गूलर की जड़ का चूर्ण पान में डालकर जिसे भी खिलाया जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा।

११. सरसों और देवदाली के चूर्ण को गोली बनाकर और उस गोली को मुंह में रखकर जिससे भी बातचीत की जाएगी वह उसी के हक में बोलने लगेगा।

१२. हरताल, मैनसिल, केसर, कूठ और सौंठ का चूर्ण करके उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलाकर तिलक लगाने से सब लोगों का वशीकरण हो जाता है।

१३. गोरोचन, कमल का पत्र, कांगनी और लाल चंदन- इनका ललाट पर तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

१४. विल्व पत्र और विजौरा नींबू को बकरी के दूध में पीसकर तिलक करने से भी लोग वशीभूत हो जाते हैं।

१५. आंवले के रस में मैनसिल और असगंध मिलाकर माथे पर लेप करने से भी हर किसी को वश में किया जा सकता है।

१६. ॐ नमः कामाख्यादेव्यै अमुकीं में वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। प्रयोग के समय एक माला का जप करें। अमुकीं के स्थान पर अभीष्ट स्त्री का नाम लें।

□□□□□□ :

१७. काक जंघा, लगर, केशर और मैनसिल का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डालेंगे, वो वश में हो जाएगी।

१८. चिता की राख, वच कूढ़, तगर और केशर का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डाल दिया जाएगा, वो वश में हो जाएगी।

१९. पान के रस में लालमखना और मैनसिल पीसकर मंगलवार के दिन तिलक करने से स्त्रियों को वशीभूत किया जा सकता है।

२०. ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति को वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जप कर इसे सिद्ध करें तथा प्रयोग के समय एक माला जप करें। पति को वश में करने के लिए निम्नलिखित तंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

२१. विष्णुक्रांत, भांगरा, गोखर और गोरोचन को पीसकर गोली बना लें। फिर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करने के बाद गोली को घिसकर तिलक करने से पति वश में हो जाता है।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

आकर्षण तंत्र में सबसे पहले (क्लीं) बीज मंत्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है इसके सिद्ध होने के बाद ही आकर्षण तंत्रों का प्रयोग करना चाहिए। क्लीं बीज मंत्र की कामबीज यानि कामकला बीज कहते हैं। त्रिकोण की ऊर्वमुख तथा अधोमुख स्थापना से जो आकृति बनती है वह योनि मुद्रा कहलाती है। इसके बीच में क्लीं की जाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिए इसका जप करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१. सर्वप्रथम भृकटि के मध्य में योनिमुद्रा की कल्पनाकरके उसके बीच में क्लीं की अक्षर की स्थापना कर, उसका ध्यान करना चाहिए।

२. प्रातः काल में दो घंटे तक इसका ध्यान अवश्य करना चाहिए।

३. स्वस्थ मन से शांत चित होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिए।

४. दाएं हाथ की कनिष्ठिका उंगली पर माला फेरनी चाहिए।

५. दंडासन का उपयोग व दक्षिण दिशा में मुंह रखना चाहिए एवं मूंगा की माला पर जप करना चाहिए।

६. छह महीने में यह बीज मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद आकर्षण मंत्र और तंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

ॐ नमः आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षणं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जपकर सिद्ध करें तथा प्रयोग के समय 1 माला जप करें।

अमुक के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना है उनका नाम लेना चाहिए।

□□□□□□ :

१. भोजपत्र पर अनामिका उंगली के रक्त से उपरोक्त मंत्र लिखें और मध्य में अभीष्ट स्त्री या पुरुष का नाम लिखकर शहद में डाल दें। इस क्रिया से उसका आकर्षण हो जाएगा, जिसका नाम लिखा होगा।

२. रवि पुष्य के दिन ब्रह्मदंडी को लाकर पीस लें। तदनंतर जिस कामिनी के मस्तक पर यह चूर्ण डाल दिया जाएगा वह स्त्री वशीभूत हो जाएगी।

३. पंचमी के दिन सूर्यावर्त वृक्ष की मूल लाकर एवं उसे पीसकर चूर्ण बना लें फिर पूर्वोक्त मंत्र से एक सौ आठ बार अभिमंत्रित कर, जिस स्त्री या पुरुष को पान के साथ खिलाएं, वो आकर्षित होकर खिंचा चला आएगा।

नोट : अंत में सभी प्रयोग समाज के हितार्थ में या अच्छे कार्य हेतु किये जायें तो अच्छा होगा । किसी भी बुरे उद्देश्य हेतु किया गया प्रयोग लाभ की अपेक्षा हानि भी कर सकता है ।

पता : डॉ. निर्मल कोठारी

ब्लू ऐस्ट्रो पॉइंट

१३ किड स्ट्रीट, कोलकाता-१६

□. □□□□ □□□□□ □□□□□□ :

जिस कर्म के द्वारा किसी स्त्री या पुरुष को अपने प्रति मुग्ध करने का भाव निहित हो, वो 'मोहनकर्म' कहलाता है । मोहन अथवा सम्मोहन यह दोनों प्रायः एक ही भाव को प्रदर्शित करते हैं । मोह को ममत्व, प्रेम, अनुराग, स्नेह, माया और सामीप्य प्राप्त करने की लालसा का कृत्य माना गया है । मोहन कर्म की यही सब प्रतिक्रियाएं होती हैं । निष्ठुर, विरोधी, विरक्त, प्रतिद्वंदी अथवा अन्य किसी को भी अपने अनुकूल, प्रणयी और स्नेही बनाने के लिए मोहन कर्म का प्रयोग किया जाता है । मोहन कर्म के प्रयोगों को सिद्ध करने के लिए पहले निम्नलिखित मंत्र का दस हजार जप करना चाहिए ।

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा । "

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□
□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□□□□□ □□ :-

१. तुलसी के सूखे हुए बीज के चूर्ण को सहदेवी के रस में पीसकर ललाट पर तिलक के रूप में लगाएं ।

२. असगंध और हरताल को केले के रस में अच्छी तरह से पीसकर उसमें गोरोचन मिलाएं तथा मस्तक पर तिलक लगाएं तो देखने वाले मोहित हो जायेंगे ।

३. वच, कूट, चंदन और काकड़ सिंगी का चूर्ण बनाकर अपने शरीर तथा वस्त्रों पर धूप देने अथवा इसी चूर्ण का मस्तक पर तिलक लगाने से मनुष्य, पशु, पक्षी जो भी देखेगा मोहित हो जाएगा । इसी प्रकार पान की मूल को घिसकर मस्तक पर उसका तिलक करने से भी देखने वाले मोहित होते हैं ।

४. केसर, सिंदूर और गोरोचन इन तीनों को आंवले के रस में पीसकर तिलक करने से लोग मोहित होते हैं ।

५. श्वेत वच और सिंदूर पान के रस में पीसकर एवं तिलक लगाकर जिसके भी सामने जाएंगे वो मोहित हो जाएगा ।

६. अपामार्ग (जिसे औंगा, मांगरा या लाजा भी कहते हैं) धान की खील और सहदेवी - इन सबको पीसकर उसका तिलक करने से व्यक्ति किसी को भी मोहित कर सकता है।

७. श्वेत दूर्वा और हरताल को पीसकर तिलक करने से मनुष्य तीनों लोकों को मोहित कर लेता है।

८. कपूर और मैन्सिल को केले के रस में पीसकर तिलक करने से अभीष्ट स्त्री-पुरुष को मोहित कर सकता है।

९. तंत्र साधक गूलर के पुष्प से कपास के साथ बत्ती बनाए और उसको नवनीत से जलाए। जलती हुई बत्ती की ज्वाला से काजल पारे तथा उस काजल को रात्रिकाल में अपनी आंखों में आंज ले। इस काजल के प्रभाव से वो सारे जगत् को मोहित कर लेता है। ऐसा सिद्ध किया हुआ काजल कभी किसी को नहीं देना चाहिए।

१०. श्वेत धुंधली के रस में ब्रह्मदंडी की मूल को पीसने के बाद शरीर पर लेप करने से सारा संसार मोहित हो जाता है।

११. बिल्व पत्रों को लाने के बाद उन्हें छाया में सुखा लें। फिर उन्हें पीसकर कपिला गाय के दूध में मिलाकर गोली बना लें। उस गोली को घिसकर तिलक करने से देखने वाला तन, मन और धन से मोहित हो जाएगा।

१२. श्वेत मदार की मूल और श्वेत चंदन-इन दोनों को पीसकर उसका शरीर पर लेप करें। इस क्रिया से किसी को भी सहज ही मोहित किया जा सकता है।

१३. श्वेत सरसों को विजय (भांग) की पत्ती के साथ पीसकर मस्तक पर लेप करें। अब जिसके सामने भी जाएंगे वो मोहित हो जाएगा।

१४. तुलसी के पत्तों को लाकर उन्हें छाया में सुखा लें। फिर उनमें विजया यानी भांग के बीज तथा असगंध को मिलाकर कपिला गाय के दूध में पीस लें। तत्पश्चात् उसकी चार-चार माशे की गोलियां बनाकर प्रातः उठकर खाएं। इससे सारा जगत् मोहित हुआ प्रतीत होता है।

१५. कड़वी तुंबी के बीजों के तेल में कपड़े की बत्ती बनाकर जलाएं और उससे काजल पार कर आंखों में अंजन की भांति लगाएं। अब जिसकी तरफ भी दृष्टि उठाकर देखेंगे, वो मोहित हो जाएगा।

१६. अनार के पंचांग को पीसकर उसमें श्वेत धुंधली मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाएं। इस तिलक के प्रभाव से कोई भी मोहित हो सकता है।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

स्तंभन क्रिया का सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। बुद्धि को जड़, निष्क्रिय एवं हतप्रभ करके व्यक्ति को विवेक शून्य, वैचारिक रूप से पंगु बनाकर उसके क्रिया-कलाप को रोक देना स्तंभन कर्म की

प्रमुख प्रतिक्रिया है। इसका प्रभाव मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर पर भी पड़ता है। स्तंभन के कुछ अन्य प्रयोग भी होते हैं। जैसे-जल स्तंभन, अग्नि स्तंभन, वायु स्तंभन, प्रहार स्तंभन, अस्त्र स्तंभन, गति स्तंभन, वाक् स्तंभन और क्रिया स्तंभन आदि।

त्रेतायुग के महान् पराक्रमी और अजेय-योद्धा हनुमानजी इन सभी क्रियाओं के ज्ञाता थे। तंत्र शास्त्रियों का मत है कि स्तंभन क्रिया से वायु के प्रचंड वेग को भी स्थिर किया जा सकता है। शत्रु, अग्नि, आंधी व तूफान आदि को इससे निष्क्रिय बनाया जा सकता है। इस क्रिया का कभी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए तथा समाज हितार्थ उपयोग में लेना चाहिए। अग्नि स्तंभन का मंत्र निम्न है।

१. ॐ नमो अग्निरुपाय मम् शरीरे स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा।

अयुतजपात् सिद्धि भवति।

अष्टोत्तरशत जपात् प्रयोग (सिद्धिम) भवति॥''

ॐ नमो इत्यादि अग्नि स्तंभन का मंत्र है। इस मंत्र के दस हजार जप करने से सिद्धि होती है तथा एक सौ आठ जप करने से प्रयोग सिद्ध होता है।

□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ :

२. घी व ग्वार के रस में आक के ताजा दूध को मिलाकर, शरीर पर उसका लेप करने से भी अग्नि स्तंभन होता है।

३. केले के रस में घृतकुमारी व ज्वारपाठा के रस को मिलाकर शरीर पर लेप करने से शरीर अग्नि में घिरा होने पर भी नहीं जलता है।

४. पीपल, मिर्च और सौंठ को कई बार चबाकर निगल लें। इसके पश्चात् मुंह में जलता हुआ अंगारा भी रखें, तब भी मुंह नहीं जलेगा।

५. चीनी के साथ गाय के घृत को पीकर अदरक के टुकड़े को मुंह में डालकर चबाएं फिर तपे हुए लोहे के टुकड़े को मुंह में रखे तो वह भी बर्फ की भांति ठंडा प्रतीत होगा।

६. ॐ नमो दिगंबराय अमुकस्य स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा।

अयुत जपात् मंत्रः सिद्धो भवति।

अष्टोत्तर शत जपात् प्रयोगः सिद्धो भवति।

उपर्युक्त मंत्र का दस हजार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है और आवश्यकता होने पर एक सौ आठ बार जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र -

अमुकस्य' के स्थान पर जिसके आसन पर स्तंभन करना हो उसका नाम लेना चाहिए ।

७. भांगरे के रस में सरसों (सफेद) को पीसकर, मस्तक पर उसका लेप करके जिसके सम्मुख भी जाएंगे उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जाएगा ।

८. अपामार्ग और सहदेई को लोहे के पात्र में डालकर पीसें और उसका तिलक मस्तक पर लगाएं । अब जो भी देखेगा उसका स्तंभन हो जाएगा ।

९. भांगरा, चिरचिटा, सरसों, सहदेई, कंकोल, वचा और श्वेत आक इन सबको समान मात्रा में लेकर कूटें और सत्व निकाल लें । फिर किसी लोहे के पात्र में रखकर तीन दिनों तक घोटें । अब जब भी उसका तिलक कर शत्रु के सम्मुख जाएंगे, तो उसकी बुद्धि कुठित हो जाएगी ।

१०. ॐ नमो भगवते महाकाल पराक्रमाय शत्रूणां शस्त्र स्तंभन कुरु-कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते महाकाल पराक्रमाय शत्रूणां शस्त्र स्तंभन कुरु-कुरु स्वाहा ।

एक लक्ष जपामंत्रः सिद्धो भवति नान्यथा ।

अष्टोत्तरशत जपात् प्रयोगः सिद्ध्यति ध्रुवम् ॥

उपरोक्त मंत्र का एक लाख जप करने से वह सिद्ध हो जाता है और जब इसका प्रयोग करना हो, एक सौ आठ बार पुनः जप कर प्रयोग करें तो यह प्रयोग सफल होता है ।

११. पुष्य नक्षत्र वाले रविवार के दिन अपराजिता की मूल को उखाड़कर मुंह में रखने अथवा सिर पर धारण करने से शस्त्र स्तंभन हो जाता है ।

१२. रवि पुष्य के दिन श्वेत गुंजा की मूल को लाकर धारण करें तो युद्ध में शत्रु के शस्त्र का भय नहीं रहता अथवा उसके शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ।

१३. खजूर की मूल को पैर और हाथ में धारण करने से खंजर-शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ।

१४. जामुन की मूल को हाथ पर और केबड़े की मूल को मस्तिष्क पर तथा ताड़ की मूल को मुंह में रखने से शस्त्र चाहे जिस प्रकार हो, उसका स्तंभन हो जाता है । इन तीनों जड़ों का चूर्ण बनाकर घृत के साथ सेवन करने से आक्रमणकारी के शस्त्र का स्तंभन हो जाता है ।

१५. चमेली की मूल को मुख में रखने से किसी भी शस्त्र का भय नहीं रहता । रविवार को पुष्य नक्षत्र आने पर अपामार्ग की मूल लाकर उसे पीस लें और शरीर पर उसका लेप करें तो सभी प्रकार के शस्त्र से स्तंभन हो जाता है ।

१६. ॐ नमः काल रात्रि त्रिशूलधारिणी ।

मम शत्रुसैन्य स्तंभन कुरु कुरु स्वाहा ।

एक लक्षजपाच्यापं मंत्रः सिद्धः प्रजायते ।

उपरोक्त शतजपात् प्रयोगे सिद्धिरुत्तमा ॥

उपर्युक्त मंत्र के एक लाख जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और प्रयोग के समय एक सौ आठ बार जप करके प्रयोग करने से सैन्य स्तंभन होता है ।

१७. मिट्टी के एक पात्र में श्मशान की भस्म से शत्रु का नाम लिखें और उसे नीले सूत्र से बांधकर एक गहरे गड़ढे में गाड़ दें । तदनंतर उस पर एक पत्थर रखकर ढांप दें । ऐसा करने से शत्रु की पूरी सेना का ही स्तंभन हो जाता है ।

१८. ऊँ नमो भगवते महारौद्राय

गर्भस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए 1 लाख जप करना जरूरी है । अन्यथा प्रयोग सफल नहीं होंगे । जब भी प्रयोग करना हो तो एक सौ आठ बार जप अवश्य करें ।

□□□□□□ :

१९. केशर, शक्कर, ज्वारपाठा और कुंदपुष्प को समान मात्रा में शहद में मिलाकर खाने से गर्भपात से रक्षा होती है ।

२०. ऋतुस्नाता स्त्री यदि रेंडी के बीज को निगल ले तो उसका गर्भ कभी नहीं गिरता । कमर में धतूरे का बीज बांधने से भी गर्भ स्तंभन होता है । रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब काले धतूरे की मूल लाकर गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध दें । इससे गर्भ का स्तंभन होता है ।

२१. कुम्हार के हाथ से लगी हुई चाक की मिट्टी को शहद में मिलाकर बकरी के दूध के साथ सेवन करने से गर्भ का स्तंभन होता है ।

□. □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ : ÷

द्वेष' का अर्थ है दूसरों के लाभ में अवरोध उत्पन्न करना है इसी द्वेष भावना का क्रियात्मक रूप ÷ विद्वेषण' कहलाता है । इसका मुख्य उद्देश्य होता है किन्हीं दो लोगों के बीच फूट, विद्रोह, उपद्रव, अविश्वास और शत्रुता के भाव उत्पन्न करके विघटन की उत्पत्ति करना ।

ऊँ नमो नारदाय अमुकस्याकेन

सहविद्वेषणम् कुरु-कुरु स्वाहा ।

इस मंत्र का एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है और जब कोई तंत्र प्रयोग करना हो तो पहले मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके सिद्धि प्राप्त कर लेनी चाहिए। मंत्र में अमुक के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसके नाम का उच्चारण करें।

□□□□□□ :

१. शेर और हाथी के दांतों को गाय के मक्खन के साथ पीसकर जिनके नामों से आग में हवन किया जाएगा, वे विद्वेषण के प्रभाव में आ जाएंगे।

२. कुत्ते के बाल तथा बिल्ली का नाखून मिलाकर जहां जलाया जाएगा वहां के लोगों में विद्वेषण उत्पन्न हो जाएगा।

३. साही का कांटा जिसके मकान के मुख्य द्वार पर गाड़ दिया जाएगा, उस घर में हर समय कलह बनी रहेगी।

४. जब कभी भी दो व्यक्तियों के बीच द्वेष उत्पन्न करना हो, तो उनके पैरों की मिट्टी को सान एवं गूंधकर उससे एक पुतली बनाएं और श्मशान में ले जाकर उसे भूमि में गाड़ दें। इस क्रिया को करने से उनके बीच द्वेष उत्पन्न हो जाएगा।

५. कोई भाषण या समारोह चल रहा हो, तो भैंसे और घोड़े के बालों को परस्पर मिलाकर जलाएं। इससे सभा या समारोह में भगदड़ मच जाएगी।

६. एक हाथ में कव्वे का पंख और दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर विद्वेषण के मंत्र से अभिमंत्रित करें और उन दोनों पंखों को फिर काले सूत से बांधकर जिस घर में गाड़ दिया जाएगा, उस घर में रहने वालों का आपस में झगड़ा हो जाएगा।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

वशीकरण का अर्थ वश में करना है। वह कर्म जिसके द्वारा प्रयोगकर्ता अभीष्ट प्राणी को अपने वश में कर लेता है ÷ वशीकरण कहलाता है। वस्तुतः यह आकर्षण और मोहनकर्म का चरम विकसित और अत्यधिक प्रभावी रूप है।

१. ॐ नमो नारायणाय सर्व लोकानृ मम वंश कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करके इसे सिद्ध करें और प्रयोग के समय एक सौ आठ बार जप करने से प्रयोग में सफलता मिलती है। अथवा इस मंत्र को भी सिद्ध कर सकते हैं।

२. ॐ नमो भगवते उऽस्मै नाराय ध्य मोध्य मिली मिली ठः ठः स्वाहा।

शुभ मुहूर्त में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से मंत्र का जप आरंभ करें। तीस हजार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, फिर किसी पर भी प्रयोग करने से पूर्व उक्त

वस्तु को सात बार अभिमंत्रित करें तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। साधक दोनों मंत्र में से किसी को भी सिद्ध कर सकता है। दोनों मंत्र समान प्रभावशाली है।

□□□□□□ :

३. ब्रह्मदंडी, वच, और कूठ के चूर्ण को किसी भी रविवार के दिन पान में डालकर खिलाने से वह प्रयोगकर्ता के वश में हो जाएगा।

४. वट+ वृक्ष की मूल को पानी में घिसकर उसमें चिता की भस्म मिलायें और मस्तक पर उसका तिलक लगाकर जिसके सामने जाएंगे वह वश में हो जायेगा।

५. पुष्य नक्षत्र के दिन पुनर्नवा की जड़ को लाकर उसे उपरोक्त मंत्र से केवल सात बार अभिमंत्रित करे और दाएं हाथ की कलाई में बांध लें। अब जो भी उसे देखेगा, वशीभूत हो जाएगा।

६. कपिला गाय के दूध में अपामार्ग की जड़ को पीसकर तिलक लगाने वाला साधक तीनों लोकों को भी वश में कर सकता है।

७. सहदेही की छाया में सुखाकर चूर्ण बना लें। तत्पश्चात् उसे पान में डालकर जिसे भी खिलाएंगे वह वशीभूत हो जाएगा।

८. गोरोचन और सहदेवी को मिलाकर उसका तिलक करने वाला व्यक्ति सभी को वशीभूत कर लेता है।

९. उदुंबर की जड़ को घिसकर उसका तिलक करने वाला व्यक्ति किसी को भी वश में कर सकता है।

१०. गूलर की जड़ का चूर्ण पान में डालकर जिसे भी खिलाया जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा।

११. सरसों और देवदाली के चूर्ण को गोली बनाकर और उस गोली को मूंह में रखकर जिससे भी बातचीत की जाएगी वह उसी के हक में बोलने लगेगा।

१२. हरताल, मैनसिल, केसर, कूठ और सौंठ का चूर्ण करके उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलाकर तिलक लगाने से सब लोगों का वशीकरण हो जाता है।

१३. गोरोचन, कमल का पत्र, कांगनी और लाल चंदन- इनका ललाट पर तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

१४. विल्व पत्र और विजौरा नींबू को बकरी के दूध में पीसकर तिलक करने से भी लोग वशीभूत हो जाते हैं।

१५. आंवले के रस में मैनसिल और असगंध मिलाकर माथे पर लेप करने से भी हर किसी को वश में किया जा सकता है।

१६. ॐ नमः कामाख्यादेव्यै अमुकीं में वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। प्रयोग के समय एक माला का जप करें। अमुकीं के स्थान पर अभीष्ट स्त्री का नाम लें।

□□□□□□ :

१७. काक जंघा, लगर, केशर और मैनसिल का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डालेंगे, वो वश में हो जाएगी।

१८. चिता की राख, वच कूट, तगर और केशर का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डाल दिया जाएगा, वो वश में हो जाएगी।

१९. पान के रस में लालमखना और मैनसिल पीसकर मंगलवार के दिन तिलक करने से स्त्रियों को वशीभूत किया जा सकता है।

२०. ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति को वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जप कर इसे सिद्ध करें तथा प्रयोग के समय एक माला जप करें। पति को वश में करने के लिए निम्नलिखित तंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

२१. विष्णुक्रांत, भांगरा, गोखर और गोरोचन को पीसकर गोली बना लें। फिर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करने के बाद गोली को घिसकर तिलक करने से पति वश में हो जाता है।

□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ :

आकर्षण तंत्र में सबसे पहले (क्लीं) बीज मंत्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है इसके सिद्ध होने के बाद ही आकर्षण तंत्रों का प्रयोग करना चाहिए। क्लीं बीज मंत्र की कामबीज यानि कामकला बीज कहते हैं। त्रिकोण की ऊर्वमुख तथा अधोमुख स्थापना से जो आकृति बनती है वह योनि मुद्रा कहलाती है। इसके बीच में क्लीं की जाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिए इसका जप करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१. सर्वप्रथम भृकटि के मध्य में योनिमुद्रा की कल्पनाकरके उसके बीच में क्लीं की अक्षर की स्थापना कर, उसका ध्यान करना चाहिए।

२. प्रातः काल में दो घंटे तक इसका ध्यान अवश्य करना चाहिए।

३. स्वस्थ मन से शांत चित होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिए।

४. दाएं हाथ की कनिष्ठिका उंगली पर माला फेरनी चाहिए।

५. दंडासन का उपयोग व दक्षिण दिशा में मुंह रखना चाहिए एवं मूंगा की माला पर जप करना चाहिए।

६. छह महीने में यह बीज मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद आकर्षण मंत्र और तंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

ॐ नमः आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षणं कुरु-कुरु स्वाहा।

एक लाख जपकर सिद्ध करें तथा प्रयोग के समय 1 माला जप करें।

अमुक के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना है उनका नाम लेना चाहिए।

□□□□□□ :

१. भोजपत्र पर अनामिका उंगली के रक्त से उपरोक्त मंत्र लिखें और मध्य में अभीष्ट स्त्री या पुरुष का नाम लिखकर शहद में डाल दें। इस क्रिया से उसका आकर्षण हो जाएगा, जिसका नाम लिखा होगा।

२. रवि पुष्य के दिन ब्रह्मदंडी को लाकर पीस लें। तदनंतर जिस कामिनी के मस्तक पर यह चूर्ण डाल दिया जाएगा वह स्त्री वशीभूत हो जाएगी।

३. पंचमी के दिन सूर्यावर्त वृक्ष की मूल लाकर एवं उसे पीसकर चूर्ण बना लें फिर पूर्वोक्त मंत्र से एक सौ आठ बार अभिमंत्रित कर, जिस स्त्री या पुरुष को पान के साथ खिलाएंगे, वो आकर्षित होकर खिंचा चला आएगा।

नोट : अंत में सभी प्रयोग समाज के हितार्थ में या अच्छे कार्य हेतु किये जायें तो अच्छा होगा। किसी भी बुरे उद्देश्य हेतु किया गया प्रयोग लाभ की अपेक्षा हानि भी कर सकता है।

Contact us for more information

Email - grahonkichaya@rediffmail.com

Website - www.grahonkichaya.yolasite.com

Contact No. - 9650440526, 9711767936, 011-22099752